# बारह महा

बारह माहा मांझ महला ५ घरु ४

१ੴ सतगिुर प्रसादि॥

करिति किरम के वीछुड़े करि किरिपा मेलहु राम ॥
चारि कुिंट दह दसि भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार त्मबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरिपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गिणा ॥

इकु खनि तसिु बनिु जीवणा बरिथा जनमु जणा ॥
जलि थलि मिहीअलि पूरिआ रविआ विचि विणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निविंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥

प्रभ तुधु बनि दूजा को नही नानक की अरदासि ॥
आसाडु सुहंदा तसि लगै जसि मनि हरि चिरण निवास ॥५॥

सावणि सिरसी कामणी चरन कमल सउि पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बखिआ रंग कूड़ावआि दसिनि सभे छारु ॥
हरि अम्रति बूंद सुहावणी मलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तणि प्रभ संगि मिउलआि सम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलिणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥
जनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तनि कै सद बलहिार ॥
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥
सावणु तनि सुहागणी जनि राम नामु उरि हारु ॥६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥
जतु दनि देह बनिससी ततु वेलै कहसनि प्रेतु ॥
पकड़ि चलाइनि दूत जम कसिै न देनी भेतु ॥
छडि खड़ोते खनै माहि जनि सउि लगा हेतु ॥

हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥
मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥
जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥
परमेसर ते भुलिआं विआपनि सभे रोग ॥
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥

खनि महि किउडे़ होइ गए जतिडे़ माइआ भोग ॥
वचिु न कोई करि सिकै कसि थै रोवहि रोज ॥
कीता कछिू न होवई लखिआ धुरि संजोग ॥
वडभागी मेरा प्रभु मलिै तां उतरहि सभि बिओग ॥
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहबि बंदी मोच ॥
कतकि होवै साधसंगु बनिसहि सभे सोच ॥९॥

मंघरि माहि सोहंदीआ हरि पिरि संगि बैठड़ीआह ॥
तनि की सोभा कआि गणी जि साहबि मेलड़ीआह ॥
तनु मनु मउलआि राम सउि संगि साध सहेलड़ीआह ॥
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥
तनि दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पिड़ीआह ॥
जनिी रावआि प्रभु आपणा से दसिनि निति खड़ीआह ॥
रतन जवेहर लाल हरि किंठ तिनि जड़ीआह ॥
नानक बांछै धूड़ि तिनि प्रभ सरणी दरि पिड़ीआह ॥
मंघरि प्रिभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥

पोखि तुखारु न वआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥
मनु बेधिआ चरनारबिंदि दरसनि लिगड़ा साहु ॥
ओट गोविंदि गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥
बखिआ पोहि न सकई मलि साधू गुण गाहु ॥
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न वछिुड़ीआहु ॥
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सिजणु अगम अगाहु ॥
सरम पई नाराइणै नानक दरि पिईआहु ॥
पोखु सोहंदा सरब सुख जसि बखसे वेपरवाहु ॥११॥
माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि किरोधि न मोहीऐ बनिसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जसि नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥

जनि मलिआ प्रभु आपणा नानक तनि कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिनि पूरा गुरु महिरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि सिजण प्रगटे आइ ॥
संत सहाई राम के करि किरिपा दीआ मिलाइ ॥
सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंदि अलाइ ॥
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥
हलतु पलतु सवारिओनु नहिचल दितीअनु जाइ ॥
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥
जहिवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥
फलगुणि निति सलाहीऐ जसि नो तिलु न तमाइ ॥१३॥

जनि जिनि नामु धिआइआ तनि के काज सरे ॥
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥
सरब सुखा निधि चिरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥
प्रेम भगति तिनि पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥

कूड़ गए दुबधिा नसी पूरन सचि भिरे ॥
पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥
माह दविस मूरत भले जसि कउ नदरि किरे ॥
नानकु मंगै दरस दानु करिपा करहु हरे ॥१४॥१॥

NITNEM SAHIB
www.nitnempath.com